# महेंद्रभटनागर के गीत

[महेंद्रभटनागर]

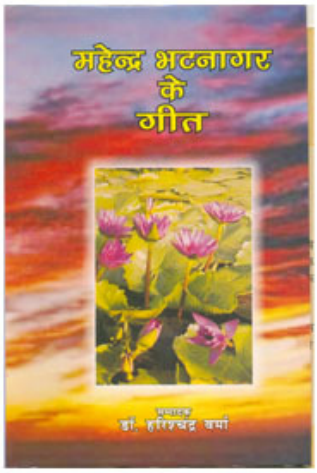


शीर्षक

1 गाओ
2 स्वर्ण की सौगात
3 भोर का गीत
4 माँझी
5 एक रात

6 कौन तुम
7 गीत में तुमने सजाया
8 मुसकुराए तुम
9 हे विधना
10 उषा रानी
11 सुहानी सुबह
12 स्वागत
13 लघु जीवन
14 फाग
15 होली
16 समता का गान
17 आओ जलाएँ
18 वर्षा
19 दीप जलाओ
20 दीप-माला
21 अभिषेक
22 दीप धरो
23 रूपासक्ति
24 मोह-माया
25 रात बीती
26 अगहन की रात
27 दूर तुम
28 पिया से
29 बिरहिन
30 प्रतीक्षा
31 साध
32 स्नेह भर दो

33 रतजगा
34 वंचना
35 अब नहीं ...
36 भोर होती है
37 कौन हो तुम
38 तुम
39 मत बनो कठोर
40 किरण
41 चाँद से
42 चाँद सोता है
43 कौन कहता है ...
44 बसंत
45 आ गया सावन
46 मेघ और शशि
47 निवेदन
48 चाँदनी में
49 ज्योत्स्ना
50 बुरा क्या किया था
51 कोई शिकायत नहीं
52 विरह का गान
53 धन्यवाद
54 छा गये बादल
55 नींद
56 दीप जला दो
57 आकुल-अन्तर
58 मेरा चाँद
59 अमावस की अँधेरी में

60 मिल गये थे
61 अकारथ
62 विवशता
63 आकर्षण
64 चाँद और पत्थर (1)
65 चाँद और पत्थर (2)
66 न जाने क्यों
67 साथ
68 दुराव
69 यह न समझो
70 तुम से मिलना तो ...
71 आत्म-सवीकृति
72 आँसुओं का मोल
73 बहने देना
74 विनाश
75 विकास
76 रस-संचार
77 री हवा
78 रात
79 हेमन्त
80 घटाएँ
81 गाओ गीत
82 तुम
83 तुम्हारी माँग का कुंकुम
84 तुम्हारी याद
85 याद
86 सहसा

87 प्रतीक्षा में
88 परिणाम
89 कामना
90 अप्रतिहत
91 न रुकते चरण
92 मूरत अधूरी
93 असह
94 मजबूर
95 सहारा
96 जीवन नहीं
97 हमें यह पता है
98 साथी
99 यह नहीं मंज़िल
100 स्वर-साधना
101 भोर
102 प्राण-दीप
103 परिचय
104 ज्योति-पर्व
105 ज्वार और नाविक
106 जिजीविषा
107 अपराजित
108 नव-निर्माण
109 बढ़ते चलो
110 विश्वास
111 अंध-काल
112 जागते रहना
113 सुर्खियाँ निहार लो

114 युग-विहग
115 स्थितियाँ और द्वन्द्व
116 बदलता युग
117 कहाँ अवकाश
118 विश्व-श्री
119 जनतंत्र-आस्था
120 गणतंत्र
121 प्रण
122 चाह
123 शीतार्द्र
124 नयी ज़िन्दगी
125 राग-संवेदन

==========

(1) गाओ

.

गाओ कि जीवन - गीत बन जाये !

.

हर क़दम पर आदमी मजबूर है,
हर रुपहला प्यार-सपना चूर है,
आँसुओं के सिन्धु में डूबा हुआ
आस-सूरज दूर, बेहद दूर है !
गाओ कि कण-कण मीत बन जाये !

.

हर तरफ़ छाया अँधेरा है घना,

हर हृदय हत, वेदना से है सना,
संकटों का मूक साया उम्र भर
क्या रहेगा शीश पर यों ही बना ?
गाओ, पराजय - जीत बन जाये !
.
साँस पर छायी विवशता की घुटन,
जल रही है ज़िन्दगी भर कर जलन,
विष भरे घन-रज कणों से है भरा
आदमी की चाहनाओं का गगन,
गाओ कि दुख - संगीत बन जाये !
.

(2) स्वर्ण की सौगात
.
स्वर्ण की सौगात लायी भोर !
.

री जगो कलियो ! उठो, उपहार आँचल में भरो,
सज सुनहले रूप में, मधु भाव पाटल में भरो,
भर नया उन्मेष अंगों में
झूम लो नव-नव उमंगों में
गंधवह शीतल तरंगों में
प्रीति-पुलकित हर लता चितचोर !
.
खोल दो अन्तर झरोखे - द्वार - वातायन सभी,
अब नहीं, ऐसे अँधेरे में घिरे आनन कभी,
स्वर्ण-सागर में नहाओ रे
आभरण से तन सजाओ रे

नव प्रभाती गीत गाओ रे
झमझमा कर नाच ले मन-मोर !
.

(3) भोर का गीत
.
भोर की लाली हृदय में राग चुप-चुप भर गयी !
.
जब गिरी तन पर नवल पहली किरन
हो गया अनजान चंचल मन - हिरन,
प्रीत की भोली उमंगों को लिए
लाज की गद - गद तरंगों को लिए
प्रात की शीतल हवा आ, अंग सुरभित कर गयी !
.
प्रिय अरुण पा जब कमलिनी खिल गयी
स्वर्ग की सौगात मानों मिल गयी,
झूमती डालें पहन नव आभरण,
हर्ष - पुलकित किस तरह वातावरण,
भर सुनहरा रंग, ऊषा कर गयी वसुधा नयी !
.

(4) माँझी
.
साँझ की बेला घिरी, माँझी !
.
अब जलाया दीप होगा रे किसी ने
भर नयन में नीर,

और गाया गीत होगा रे किसी ने
साध कर मंजीर,
मर्म जीवन का भरे अविरल बुलाता
सिन्धु सिकता तीर,
स्वप्न की छाया गिरी, माँझी!
.

दिग्वधू-सा ही किया होगा किसी ने
कुंकुमी शृंगार,
झिलमिलाया सोम-सा होगा किसी का
रे रुपहला प्यार,
लौटते रंगीन विहगों की दिशा में
मोड़ दो पतवार,
सृष्टि तो माया निरी, माँझी !
.

(5) एक रात
.

अँधियारे जीवन - नभ में
बिजुरी-सी चमक गयीं तुम !
.

सावन झूला झूला जब
बाँहों में रमक गयीं तुम !
.

कजली बाहर गूँजी जब
श्रुति-स्वर-सी गमक गयीं तुम !
.

महकी गंध त्रियामा जब
पायल-सी झमक गयीं तुम !
.

तुलसी-चैरे पर आ कर
अलबेली छमक गयीं तुम !
.
सूने घर - आँगन में आ
दीपक-सी दमक गयीं तुम !
.
(6) कौन तुम . .
.
कौन तुम अरुणिम उषा-सी मन-गगन पर छा गयी हो ?
.
लोक धूमिल रँग दिया अनुराग से,
मौन जीवन भर दिया मधु राग से,
दे दिया संसार सोने का सहज
जो मिला करता बड़े ही भाग से,
कौन तुम मधुमास-सी अमराइयाँ महका गयी हो ?
.
वीथियाँ सूने हृदय की घूम कर,
नव-किरन-सी डाल बाहें झूम कर,
स्वप्न-छलना से प्रवंचित प्राण की
चेतना मेरी जगायी चूम कर,
कौन तुम नभ-अप्सरा-सी इस तरह बहका गयी हो ?
.
रिक्त उन्मन उर-सरोवर भर दिया,
भावना संवेदना को स्वर दिया,
कामनाओं के चमकते नव शिखर
प्यार मेरा सत्य शिव सुन्दर किया,
कौन तुम अवदात री ! इतनी अधिक जो भा गयी हो ?
.
(7) गीत में तुमने सजाया . .
.

गीत में तुमने सजाया रूप मेरा
मैं तुम्हें अनुराग से उर में सजाऊँ !
.
रंग कोमल भावनाओं का भरा
है लहरती देख कर धानी धरा
नेह दो इतना नहीं, सभँलो ज़रा
गीत में तुमने बसाया है मुझे जब
मैं सदा को ध्यान में तुमको बसाऊँ !
.
बेसहारे प्राण को निज बाँह दी
तप्त तन को वारिदों-सी छाँह दी
और जीने की नयी भर चाह दी
गीत में तुमने जतायी प्रीत अपनी
मैं तुम्हें अपना हृदय गा-गा बताऊँ !
.
(8) मुसकुराए तुम . .
.
मुसकुराए तुम, हृदय-अरविन्द मेरा खिल गया !
देख तुमको हर्ष गदगद, प्राप्य मेरा मिल गया !
.
चाँद मेरे ! क्यों उठाया
इस तरह जीवन-जलधि में ज्वार रे ?
पा गया तुममें सहारा
कामिनी ! युग-युग भटकता प्यार रे !
आज आँखों में गया बस, प्रीत का सपना नया !
.
रे सलोने मेघ सावन के
मुझे क्यों इस तरह नहला दिया ?
क्यों तड़प नीलांजने !

निज बाहुओं में नेह से भर-भर लिया ?
साथ छूटे यह कभी ना, हे नियति ! करना दया !
.
(9) हे विधना
.
हे विधना ! मोरे आँगन का बिरवा सूखे ना !
.
यह पहली पहचान मिठास भरा
रे झूमे लहराये रहे हरा
हे विधना ! मोरे साजन का हियरा दूखे ना !
.
लम्बी बीहड़ सुनसान डगरिया
रे हँसते जाये बीत उमरिया
हे विधना ! मोरे मन-बसिया का मन रूखे ना !
.
कभी न जग की आँख लगे
साँसत की अँधियारी दूर भगे
हे विधना ! मोरे जोबन पर बिरहा ऊखे ना !
.
(10) उषा रानी
.
नील नभ-सर में मुदित मुग्धा उषा रानी नहाती है !
.
शशि-बंध में बँध, रात भर आसव पिया
प्रतिदान जिसका प्रीति पावन से दिया
नव अंगरागों से जगत सुरभित किया
सोच हेला-हाव, अरुणिम तार रेशम के बहाती है !
.
नव रंग सरसिज के भरे जिसका वदन
परितोष भावों को किये जैसे वहन

प्रिय कल्पना में  मंजु मंगल मन मगन
रे अकारण हर दिशा सीकर उड़ा कर गहगहाती है !
.
(11) सुहानी सुबह
.
जीवन की हर सुबह सुहानी हो !
.
भर लो हास बहारों का
नदियों कूल कछारों का
फूलों गजरों  हारों का
कन-कन की हर्षान्त कहानी हो !
.
मीठा राग  विहंगों का
पागल प्रेम  उमंगों का
अन्तर लाज  तरंगों का
छलिया दुनिया नहीं बिरानी हो !
.
शीतल नेह  निगाहों से
भर दो दुनिया चाहों से
प्यार भरे  गलबाहों  से
लहकी-लहकी मधुर जवानी हो !
.
(12) स्वागत
.
जूही  मेरे  आँगन में महकी
रंग-बिरंगी  आभा से लहकी !
.
चमकीले  झबरीले  कितने
इसके कोमल-कोमल किसलय,
है  इसकी  बाँहों  में  मृदुता

है इसकी आँखों में परिचय !
भोली - भोली गौरैया चहकी
लटपट मीठे बोलों में बहकी !

.

लम्बी लचकीली हरिआयी
डालों डगमग - डगमग झूली
पाया हो जैसे धन स्वर्गिक
कुछ-कुछ ऐसी हूली - फूली
लगती है कितनी छकी-छकी
गह-गह गहनों-गहनों गहकी !

.

महकी, मेरे आँगन में महकी
जूही मेरे आँगन में महकी !
(पौत्री के लिए / वात्सल्य)

.

(13) लघु जीवन

.

फूलों का संसार हमारा है !

.

उज्ज्वल हास लुटाते हैं
मधु मकरंद उड़ाते हैं
मारुत पेंग सुहाते हैं
झंकृत उर हर तार हमारा है !

.

ले लो हार बनाने को
भर लो माँग सजाने को
सूना गेह बसाने को
भोला-भोला प्यार हमारा है !

.

हमको देख, लजाओ ना

छलना भाव जताओ ना
इतना हाय  सताओ ना
दो पल का  शृंगार हमारा है !
.
(14) फाग
.
फागुन का महीना है,  मचा है फाग
होली छाक छाई है; सरस रँग-राग !
.
बालों में  गुछे दाने,  सुनहरे  खेत
चारों ओर  झर-झर  झूमते समवेत !
.
पुरवा  प्यार  बरसा कर , रही है डोल
सरसों रूप सरसा कर, खड़ी मुख खोल !
.
रे, हर गाँव  बजते  डफ़ मँजीरे ढोल
देते साथ मादक  नव सुरीले  बोल !
.
चाँदी की पहन पायल सखी री नाच,
आया मन पिया चंचल सखी री नाच !
.
(16) समता का गान
.
मानव समता के रंगों में
आज नहा लो !
.
सबके तन पर, मन पर है जिन
चमकीले रंगों  की  आभा,
उन  रंगों में  आज  मिला दो
अपनी मंद प्रकाशित द्वाभा,

युग-युग संचित गोपन कल्मष
आज बहा दो !

.

भूलो जग के भेद-भाव सब
वर्ण-जाति के, धन-पद-वय के,
गूँजे दिशि-दिशि में स्वर केवल
मानव महिमा गरिमा जय के,
मिथ्या मर्यादा का मद-गढ़
आज ढहा दो !

.

(17) आओ जलाएँ

.

आओ जलाएँ
कलुष-कारनी कामनाएँ !

.

नये पूर्ण मानव बनें हम,
सकल-हीनता-मुक्त,अनुपम
आओ जगाएँ
भुवन-भाविनी भावनाएँ !

.

नहीं हो परस्पर विषमता,
फले व्यक्ति-स्वातंत्र्य-प्रियता,
आओ मिटाएँ
दलन-दानवी-दासताएँ !

.

कठिन प्रति चरण हो न जीवन,
सदा हों न नभ पर प्रभंजन,
आओ बहाएँ
अधम आसुरी आपदाएँ !

.

## (18) वर्षा

.

(1) अंक भर-भर नव सलेटी बादलों को
स्नेह-पूरित आ गयी बरसात रे !
हर मलिन उर को सहज ही दे गयी मधु-
भावनाओं की नयी सौगात रे !

.

(2) एकरसता स्वर अनारत भंग कर जब
राग बन रिमझिम बरसती है घटा,
दूर क्षितिजों तक बिखर जाती अनावृत
हो तभी नव-सृष्टि की गोपन छटा !

.

(3) मन-सरोवर में नई हलचल लिए, नव
हाव से रह-रह थिरकतीं उर्मियाँ,
कौन ने अव्यक्त मधुरस-धार में यों
प्राण मेरा आज रे नहला दिया !

.

## (19) दीप जलाओ

.

आँगन-आँगन दीप जलाओ,
दीपों का त्योहार मनाओ !

.

स्वर्णिम आभा घर-घर बिखरे,
मनहर आनन, कन-कन निखरे,
ज्योतिर्मय सागर लहराये
काली - काली रात सजाओ !

.

निशि अलकों में भर-भर रोली,
नाचें जगमग किरनें भोली,

आलोक घटा घिर-घिर आये
सारी सुध-बुध भूल नहाओ !

.

हर उर अभिनव नेह भरा हो,
युग-युग रोई धन्य धरा हो,
चलो सुहागिन, थाल उठाओ
नभ - गंगा में दीप बहाओ !

.

(20) दीप-माला

.

आज घर-घर छा रहा उल्लास !

.

भर हृदय में प्रीत
मधु मदिर संगीत
आज घर-घर दीपकलिका वास !

.

नव सुनहरा गात
जगमगाती रात
आज घर-घर जा लुटाती हास !

.

कर रमन शृंगार
भर उमंग विहार
आज घर-घर दीपमाला रास !

.

(21) अभिषेक

.

माना अमावस की अँधेरी रात है,
पर, भीत होने की अरे क्या बात है ?
एक पल में लो अभी
जगमग नये आलोक के दीपक जलाता हूँ !

.
माना, अशोभन, प्रिय धरा का वेष है,
मन में पराजय की व्यथा ही शेष है,
पर,निमिष में लो अभी
अभिनव कला से फिर नयी दुलहिन सजाता हूँ !
.
कह दो अँधेरे से प्रभा का राज है,
हर दीप के सिर पर सुशोभित ताज है,
कुछ क्षणों में लो अभी
अभिषेक आयोजन दिशाओं में रचाता हूँ !
.
(22) दीप धरो
.
सखि ! दीप धरो !
.
काली-काली अब रात न हो,
घनघोर तिमिर बरसात न हो,
बुझते दीपों में हौले - हौले
सखि ! स्नेह भरो !
.
दमके प्रिय आनन हास लिए,
आगत नवयुग की आस लिए,
अरुणिम अधरों से हौले-हौले
सखि ! बात करो !
.
बीते बिरहा के सजल बरस,
गूँजे मंगल नव गीत सरस,
घर आये प्रियतम, हौले-हौले
सखि ! हीय हरो !
.

(23) रूपासक्ति

.

सोने न देती सुछबि झलमलाती किसी की !

.

जादू भरी रात, पिछला पहर,
ओढ़े हुआ जग अँधेरा गहर,
भर प्रीत की लोल शीतल लहर,
सूरत सुहानी सरल मुसकराती किसी की !

.

गहरी बड़ी जो मिली पीर है,
निर्धन हृदय के लिए हीर है,
अंजन सुखद नेह का नीर है,
अल्हड़ अजानी उमर जगमगाती किसी की !

.

रीझा हुआ मोर-सा मन मगन,
बाहें विकल, काश भर लूँ गगन,
कैसी लगी यह विरह की अगन,
मधु-गंध-सी याद रह-रह सताती किसी की !

.

(24) मोह-माया

.

सोनचंपा-सी तुम्हारी याद साँसों में समायी है !

.

हो किधर तुम मल्लिका-सी रम्य तन्वंगी,
रे कहाँ अब झलमलाता रूप सतरंगी,
मधुमती-मद-सी तुम्हारी मोहिनी रमनीय छायी है !

.

मानवी प्रति कल्पना की कल्प-लतिका बन,
कर गयीं जीवन जवा-कुसुमों भरा उपवन,
खो सभी, बस, मौन मन-मंदाकिनी हमने बहायी है !

.

हो किधर तुम , सत्य मेरी मोह-माया री,
प्राण की आसावरी, सुख धूप-छाया री,
राह जीवन की तुम्हारी चित्रसारी से सजायी है !

.

(25) रात बीती . .

.

याद रह-रह आ रही है,
रात बीती जा रही है !

.

ज़िन्दगी के आज इस सुनसान में
जागता हूँ मैं तुम्हारे ध्यान में
सृष्टि सारी सो गयी है,
भूमि लोरी गा रही है !

.

झूमते हैं चित्र नयनों में कयी
गत तुम्हारी बात हर लगती नयी
आज तो गुज़रे दिनों की
बेरुख़ी भी भा रही है !

.

बह रहे हैं हम समय की धार में,
प्राण ! रखना, पर भरोसा प्यार में,
कल खिलेगी उर-लता जो
किस क़दर मुरझा रही है !

.

(26) अगहन की रात

.

तुम नहीं; और अगहन की ठंडी रात !

.

संध्या से ही सूना-सूना, मन बेहद भारी है,

मुरझाया-सा जीवन-शतदल, कैसी लाचारी है !
है जाने कितनी दूर सुनहरा प्रात !
.
खोकर सपनों का धन, आँखें बेबस बोझिल निर्धन,
देख रही हैं भावी का पथ, भर-भर आँसू के कन,
डोल रहा अंतर पीपल का-सा पात !
.
है दूर रोहिणी का आँचल, रोता मूक कलाधर,
खोज रहा हर कोना, बिखरा जुन्हाई का सागर,
किसको रे आज बताएँ मन की बात !
.
(27) दूर तुम
.
दूर तुम प्रिय, मन बहुत बेचैन !
.
अजनबी कुछ आज का वातावरण,
कर गया जैसे कि कोई धन हरण,
और हम निर्धन बने
वेदना कारण बने
मूक बन पछता रहे, जीवन अँधेरी रैन !
.
खो कहीं नीलांजना का हार रे,
अनमना सावन बरसता द्वार रे,
और हम एकांत में
रात के सीमांत में
जागते खोये हुए-से, पल न लगते नैन !
.
(28) प्रिया से
.
इस तरह यदि दूर रहना था,

तो बसे क्यों प्राण में ?

.

है अपरिचित राह जीवन की
साथ में सम्बल  नहीं,
व्योम में, मन में घिरी झंझा,
एक पल को कल नहीं,
        यदि अकेले भार सहना था,
        तो बसे क्यों ध्यान में ?

.

जल रही जीवन-अभावों की
आग  चारों ओर रे,
घिर रहा अवसाद अंतर में
है थका मन-मोर रे,
        इस तरह यदि मूक रहना था
        तो बसे क्यों गान में ?

.

(29) बिरहिन

.

कब सरल मुसकान पाटल-सी बिखेरोगे सजन !

.

        अनमना सूना बहुत  बोझिल हृदय
        धड़कनों के पास आओ, हे सदय !
कर रही बिरहिन प्रतीक्षा, उर भरे जीवन-जलन !

.

        धूप में मुरझा  रही यौवन-लता,
        मधु-बसंती प्यार इसको दो बता,
मोरनी-सी नाच लूँ जी भर, रजत पायल पहन !

.

        साथ ले चितचोर  सोयी है निशा,

भाविनी-सी राग-रंजित हर दिशा,
रे अजाना दर्द प्राणों का, करूँ कैसे सहन !

.

(30) प्रतीक्षा

.

कितने दिन बीत गये
सपन न आये !

.

जागे सारी - सारी रात
डोला अंतर पीर - पात
मन में घुमड़ी मन की बात
सजन न आये !

.

मेघ मचाते नभ में शोर
जंगल-जंगल नाचे मोर
हमको भूले री चितचोर
सदन न आये !

.

भर-भर आँचल कलियाँ-फूल
दीप बहाये सरिता कूल
रह-रह तरसे पाने धूल
चरन न आये !

.

(31) साध

.

कितने मीठे सपने तुमने दे डाले
पर, धरती पर प्यार सँजोया एक नहीं !

.

युग-युग से जग में खोज रहा एकाकी
पर, नहीं मिला रे मनचाहा मीत कहीं,

कोलाहल में मूक उमरिया बीत गयी
सुन पाया, पल भर भी, मधु संगीत नहीं
भर-भर डाले क्षीर-सिंधु मुसकानों के
संवेदन से हृदय भिंगोया एक नहीं !

.

एक तरफ़ तो बिखरा दीं सुषमा-पूरित
सौ - सौ मधुमासों की रंगीन बहारें,
और सहज दे डाले दोनों हाथों से
गहने रवि-शशि, तो गजरे फूल-सितारे,
पर, मेरे उर्वर जीवन-पथ पर तुमने
बीज मधुरिमा का बोया एक नहीं !

.

(32) स्नेह भर दो

.

आज मेरे मौन बुझते दीप में प्रिय, स्नेह भर दो !

.

जगमगाये वर्तिका, आलोक फैले
लोक मेरा नव सुनहरा रूप ले ले
आर्द्र आनन पर अमर मुसकान खेले
मूक हत अभिशप्त जीवन, राग-रंजित प्रेय वर दो !

.

बंद युग-युग से हृदय का द्वार मेरा
राह भूला, तम भटकता प्यार मेरा
भग्न, जीवन-बीन का हर तार मेरा
जग-जलधि में डूबते को बाँह दो, विश्वास-स्वर दो !

.

(33) रतजगा

.

रह-रह कहीं दूर, मधु बज रही बीन !

.

आयी नशीली निशा
मदमस्त है हर दिशा
घिर-घिर रही याद, सुधबुध पिया-लीन !
.
मधु-स्वप्न खोया हुआ
जग शांत सोया हुआ
प्रिय-रूप-जल-हीन, अँखियाँ बनी मीन !
.
आशा-निराशा भरे
जीवन-पिपासा भरे
दिल आज बेचैन, खामोश ग़मगीन !
.
रोती हुयी हर घड़ी
कैसी मुसीबत पड़ी
जैसे कि सर्वस्व मेरा लिया छीन !
.
(34) वंचना
.
जिसको समझा था वरदान
वही अभिशाप बन गया !
.
चमका ही था अभिनव चाँद
गगन में, मेघ छा गये,
महका ही था मेरा बाग
कि सिर पर वज्र आ गये,
जिसको समझा था शुभ पुण्य
वही कटु पाप बन गया !
.
जिसको पा जीवन में स्वप्न

सँजोये, व्यंग्य अब बने,
जगमग करता जिन पर स्वर्ण
वही अब क्षार से सने,
जिसको समझा था सुख-सार
वही संताप बन गया !

.

(35) अब नहीं ...

.

अब नहीं मेरे गगन पर चाँद निकलेगा !

.

बीत जाएगी तुम्हारी याद में सारी उमर
पार करनी है अँधेरी और एकाकी डगर
किस तरह अवसन्न जीवन बोझ सँभलेगा !

.

शांत, बेबस, मूक, निष्फल खो उमंगों को हृदय
चिर उदासी मग्न, निर्धन, खो तरंगों को हृदय
अब नहीं जीवन - जलधि में ज्वार मचलेगा !

.

नेह-रंजित, हर्ष-पूरित, इंद्रधनुषी फाग को,
उपवनों में गूँजते रस-सिक्त पंचम राग को,
क्या पता था, इस तरह प्रारब्ध निगलेगा !

.

(36) भोर होती है

.

और अब आँसू बहाओ मत
भोर होती है !

.

दीप सारे बुझ गये
आया प्रभंजन,
सब सहारे ढह गये

बरसा प्रलय-घन,
हार, पंथी ! लड़खड़ाओ मत
भोर होती है !
.
बह रही बेबस उमड़
धारा विपथगा,
घोर अँधियारी घिरी
स्वच्छंद प्रमदा,
आस सूरज की मिटाओ मत
भोर होती है !
.
(37) कौन हो तुम
.
कौन हो तुम, चिर-प्रतीक्षा-रत, आधी अँधेरी रात में ?
.
उड़ रहे हैं घन तिमिर के
सृष्टि के इस छोर से उस छोर तक,
मूक इस वातावरण को
देखते नभ के सितारे एकटक,
कौन हो तुम, जागतीं जो इन सितारों के घने संघात में ?
.
जल रहा यह दीप किसका
ज्योति अभिनव ले कुटी के द्वार पर,
पंथ पर आलोक अपना
दूर तक बिखरा रहा विस्तार भर,
कौन है यह दीप,जलता जो अकेला,तीव्र गतिमय वात में ?
.
कर रहा है आज कोई
बार-बार प्रहार मन की बीन पर,

स्नेह काले लोचनों से
युग-कपोलों पर रहा रह-रह बिखर,
कौन-सी ऐसी व्यथा है, रात में जगते हुए जलजात में ?

.

(38) तुम

.

सचमुच, तुम कितनी भोली हो !

.

संकेत तुम्हारे नहीं समझ में आते,
मधु-भाव हृदय के ज्ञात नहीं हो पाते,
तुम तो अपने में ही डूबी
नभ-परियों की हमजोली हो !

.

तुम एक घड़ी भी ठहर नहीं पाती हो,
फिर भी जाने क्यों मन में बस जाती हो,
बन वायु बसंती, मंथर गति
से, जंगल - जंगल डोली हो !

.

(39) मत बनो कठोर

.

इन बड़री-बड़री अँखियों से, मत देखो प्रिय ! यों मेरी ओर !

.

इतने आकर्षण की छाया, जल-से अंतर पर मत डालो,
मैं पैरों पड़ता हूँ, अपनी रूप - प्रभा को दूर हटालो,
अथवा युग-नयनों में भर लो, फेंक रेशमी किरणों की डोर !

.

और न मेरे मन की धरती पर, सुख-स्नेह-सुधा बरसाओ,
यह ठीक नहीं, वश में करके, प्राणों को ऐसे तरसाओ,
छू लेने भर दो, कुसुमों से अंकित, जगमग आँचल का छोर !

.

इस सुषमा की बरखा में तो  पथ भूल रहा है  भींगा मन,
तुम उत्तरदायी, यदि सीमा तोड़े,  यह  उमड़ा नद - यौवन,
आ जाओ ना कुछ और निकट, यों इतनी तो मत बनो कठोर !
.
(40) किरण
.
उतर रही प्रमोद से ,  अबोध चंद्र की किरण !
        समस्त सृष्टि सुप्त देख कर
        रजत अरोक व्योम-मार्ग पर
समेट अंग-अंग,  वेगवान रख रही चरण !
.
        विमुक्त  खँूदती रही निडर
        हरेक गाँव घर, गली, नगर,
न शान्त रह सकी ज़रा, न कर सकी निशा-शयन !
.
(41) चाँद से
.
कपोलों को तुम्हारे चूम लूंगा
                मुसकराओ ना !
.
तुम्हारे पास  माना  रूप का आगार है,
सुनयनों में बसा  सुख-स्वप्न का संसार है,
अनावृत अप्सराएँ  नृत्य  करती हैं  जहाँ,
नवेली  तारिकाएँ  ज्योति  भरती हैं  जहाँ,
        उन्हीं के सामने जाओ; यहाँ पर
        झलमलाओ ना !
.
बड़ी खामोश  आहट है  तुम्हारे  पैर  की,
तभी तो चोर बन कर, आसमाँ की सैर की,

खुली ज्यों ही  पड़ी चादर  सुनहरी धूप की
न छिप पायी किरन कोई  तुम्हारे रूप की
बहाना अंग ढँकने का, लचर इतना
बनाओ  ना !

.

युगों से देखता हूँ,  तुम बड़े ही मौन हो,
बताओ तो ज़रा, मैं पूछता हूँ  कौन हो ?
न पाओगे कभी, जा दृष्टि से यों भाग कर
तुम्हारा धन गया है आज आँगन में बिखर,
रुको, पथ बीच, चुपके से मुझे उर में
बसाओ  ना !

.

(42) चाँद सोता है

.

सितारों से सजी चादर बिछाये चाँद सोता है !

.

बड़ा निश्चिन्त है तन से
बड़ा निश्चिन्त है मन से
बड़ा निश्चिन्त जीवन से
किसी के प्यार का आँचल दबाये चाँद सोता है !

.

नयी सब भावनाएँ हैं
नयी सब कल्पनाएँ हैं
नयी सब वासनाएँ हैं
हृदय में स्वप्न की दुनिया बसाये चाँद सोता है !

.

सुखद हर साँस है जिसकी
मधुर हर आस है जिसकी
सनातन प्यास  है जिसकी

विभा को वक्ष पर अपने लिटाये चाँद सोता है !

.

(43) कौन कहता है ...

.

कौन कहता है कि मेरे चाँद में जीवन नहीं है ?

.

चाँद मेरा खूब हँसता - मुसकराता है,
खेलता है और फिर छिप दूर जाता है,
कौन कहता है कि मेरे चाँद में धड़कन नहीं है ?

.

रात भर, यह भी किसी की याद करता है,
देखना; अक़्सर विरह में आह भरता है,
कौन कहता है कि मेरे चाँद में यौवन नहीं है ?

.

है सदा करता रहा संसार को शीतल,
है सदा करता रहा वर्षा-सुधा अविरल,
कौन कहता है कि मेरे चाँद में चंदन नहीं है ?

.

(44) बसंत

.

अंग-अंग में उमंग आज तो पिया,
बसंत आ गया !

.

दूर खेत लहलहा रहे हरे - हरे,
डोलती बयार नव-सुगंध को धरे,
गा रहे विहग नवीन भावना भरे,
प्राण ! आज तो विशुद्ध भाव प्यार का
हृदय समा गया !

.

खिल गया अनेक फूल-पात से चमन,

झूम - झूम मौन गीत गा रहा गगन,
यह लजा रही उषा कि पर्व है मिलन,
आ गया समय बहार का, विहार का
नया नया नया !

.

(45) आ गया सावन

.

प्रीति के प्रिय गीत गाओ !

.

आ गया सावन सजीवन,
हैं बरसते प्यार के घन !

.

दूर खेतों में सरस सुन्दर
मुसकराती तृप्त हरियाली,
डाल पर कलियाँ हँसीं चंचल
छलछलाकर रस भरी प्याली,
तुम न जाओ दूर मुझसे
प्राण में आ कर समाओ !

.

वायु शीतल बह रही है,
कान में कुछ कह रही है !

.

स्वर मिलन-संगीत खग-उपवन,
भू-हृदय में हो रही धड़कन,
सब खिँचे जाते जगत के कण
मूक मनहर सृष्टि आकर्षण,
भावना ले द्रोह की, तुम
यों विमुख होकर न जाओ !

.

(46) मेघ और शशि

.

नभ में मेघों के टुकड़ों से खेल रहा शशि आँख-मिचौनी !

.

शशि - सुन्दर, मोहक, आकर्षक, गोरे-गोरे अंगों वाला
इतना तन्मय जाने क्यों, जब मेघ असुन्दर काला-काला,
है क्या कोई जो बतलाये — कैसे आज हुई अनहोनी ?

.

दौड़ रहे हैं दोनों अविरल; पर ज्यों ही बादल हँसता है
तब उन्मादी-सा शशि घन की युग बाहों में जा फँसता है,
कैसे कह सकता है कोई, किसको अपनी बाज़ी खोनी !

.

दोनों ने भग कर, चरणों से लगभग नभ को नाप लिया है,
थोड़ा - थोड़ा दोनों ही, आज लिया है और दिया है,
रे रहे अजर शशि-घन की यह युग-युग जोड़ी लोनी-लोनी !

.

(47) निवेदन

.

सुप्त उर के तार फिर से
प्राण ! आकर झनझना दो !

.

नभ-अवनि में शुभ्र फैली चाँदनी,
मूक है खोयी हुयी-सी यामिनी;
और कितनी तुम मनोहर कामिनी !
आज तो बंदी बना कर
क्षणिक उन्मादी बना दो !

.

मद भरे अरुणाभ हैं सुन्दर अधर,
नैन हिरनी से कहीं निश्छल सरल,
देह 'विद्युत, काँच, जल-सी' श्वेत है,

डालियों-सी बाहु  मांसल तव नवल,
आज जीवन से भरा, नव
गीत मीठा  गुनगुना दो !
.
स्वर्ग से सुन्दर  कहीं  संसार है
हर दिशा में  हो रही  झंकार है
विश्व को यह प्रेम री ! स्वीकार है,
चिर-प्रतीक्षित - मधु-मिलन
त्योहार संगिनि ! अब मना लो !
.
(48) चाँदनी में
.
नयी चाँदनी में नहा लो, नहा लो !
.
नयन बंद कर आज सोये सितारे,
भगे जा रहे कुछ किनारे-किनारे,
खुले बंध  मन के  हमारे-तुम्हारे,
किरण-सेज पर प्रिय ! प्रणय-निशि मना लो !
.
झकोरे  मिलन-गीत  गाने लगे  हैं,
मधुर-स्वर  हृदय को हिलाने लगे हैं,
नये स्वप्न फिर  आज  छाने लगे हैं,
हँसो; और  संकोच - परदा हटा लो !
.
जवानी  लहर कर  जगी  मुसकरायी,
सिमटती - बिखरती  चली पास आयी,
बड़े मान - मनुहार  भी  साथ  लायी,
सुमुखि ! अब स्वयं को न बरबस सँभालो !
.

भ्रमर को किसी ने गले से लगाया,
सरस - गंधमय अंक में भर सुलाया,
बड़े प्यार से चूम - झूले झुलाया,
लजीली ! मुझे भी न बन्दी बना लो !

.

(49) ज्योत्स्ना

.

मेरे पास यह आती हुई इतरा रही है ज्योत्स्ना !
मुझको देख एकाकी, सतत भरमा रही है ज्योत्स्ना !

.

धीरे से मुँडेरों पर उतरती आ रही है ज्योत्स्ना !
प्यारा और मीठा गीत, रानी गा रही है ज्योत्स्ना !

.

मेरे टीन पर, छत पर बिखर कर फैलती है ज्योत्स्ना !
मेरे हाथ से, मुख से निडर बन खेलती है ज्योत्स्ना !

.

सोने भी नहीं देती, स्वयं भी जागती है ज्योत्स्ना !
होती जब सुबह, जाने कहाँ जा भागती है ज्योत्स्ना !

.

मेरे से न जाने क्यों नहीं यह बोलती है ज्योत्स्ना !
प्राणों में अनोखा प्यार-अमृत घोलती है ज्योत्स्ना !

.

(50) बुरा क्या किया था

.

मैंने, बताओ, तुम्हारा बुरा क्या किया था ?

.

कोमल कली-सी अधूरी खिली थीं
जब तुम प्रथम भूल मुझसे मिली थीं,
अनुभव मुझे भी नया ही नया था
पल भर सँभलना कठिन हो गया था,

अपना, तभी तो, सदा को तुम्हें कर लिया था !

.

जीवन-गगन में अँधेरी निशा थी
दोनों भ्रमित थे कि खोयी दिशा थी
जब मैं अकेला खड़ा था विकल बन
पाया तुम्हें प्राण ! करते समर्पण,
उस क्षण युगों का जुड़ा प्यार सारा दिया था !

.

तुमने उठा हाथ रोका नहीं था,
निश्चिन्त थीं; क्योंकि धोखा नहीं था,
बंदी गयीं बन बिना कुछ कहे ही
वरदान मानों मिला हो सदेही,
कितना सरल मूक अनजान पागल हिया था !

.

(51) कोई शिकायत नहीं

.

तुमसे मुझे आज कोई शिकायत नहीं है !

.

विवश बन, नयन भेद सारा छिपाये हुए हैं,
मिलन-चित्रा मोहक हृदय में समाये हुए हैं,
बहुत सोचता हूँ, बहुत सोचता हूँ;
कहीं दूर का पथ नया खोजता हूँ,
पर, भूलने की शुभे ! एक आदत नहीं है !

.

कभी देख लेता मधुर स्वप्न जाने-अजाने
उसी के नशे में तुम्हें पास लगता बुलाने,
बुरा क्या अगर मुसकराता रहूँ मैं
नयी एक दुनिया बसाता रहूँ मैं ?
सच, यह किसी भी तरह की शरारत नहीं है !

.
अकेली लता को कभी वृक्ष लेता लगा उर
कमलिनी थकी-सी भ्रमर को सुखद अंक में भर,
सिमटती गयी, चुप लजाती रही जब
बड़ी याद मुझको सताती रही तब,
सौन्दर्य जग का किसी की अमानत नहीं है !
.
(52) विरह का गान
.
मिल गया तुमको तुम्हारा प्यार !
.
ज़िन्दगी मेरी अमा की रात है,
एक पश्चाताप की ही बात है,
आज मेरा घर हुआ वीरान है,
मूक होठों पर विरह का गान है;
पर, खुशी है —
मिल गया तुमको मधुर संसार !
.
भाग्य में मेरे बदा था शून्य-जल,
मधु-सुधा भी बन गया तीखा गरल,
पास की पहचान अब कड़ियाँ बनीं,
वेदनामय गत मिलन-घड़ियाँ बनीं,
पर खुशी है —
मिल गया तुमको नया शृंगार !
.
ज़िन्दगी में आँधियाँ - ही - आँधियाँ
स्नेह बिन कब तक जलेगा यह दिया !
आ रहा बढ़ता भयावह ज्वार है
हाथ में आ कर, गिरा पतवार है,

पर, खुशी है —
मिल गया तुमको सबल आधार !

.

(53) धन्यवाद

.

दो क्षण सम्पुट अधरों को
तुमने दी खिलते शतदल-सी मुसकान;
कृपा तुम्हारी, धन्यवाद !

.

जग की डाल-डाल पर छाया था मधु-ऋतु का वैभव,
वसुधा के कन-कन ने खेली थी जब होली अभिनव,
मेरे उर के मूक गगन को
गुंजित कर जो तुमने गाया मधु-गान;
कृपा तम्हारी, धन्यवाद !

.

पूनम की शीतल किरनों में वन-प्रांतर डूब गये,
जब जन-जन मन में सपनों के जलते थे दीप नये,
युग-युग के अंधकार में तुम
मेरे लाये जो जगमग स्वर्ण-विहान
कृपा तुम्हारी, धन्यवाद !

.

जब प्रणयोन्माद लिए, बजती मुरली मनुहारों की,
घर-धर से प्रतिध्वनियाँ आतीं गीतों झनकारों की,
दो क्षण को ही जो तुमने आ
बसा दिया मेरा अन्तर-घर वीरान;
कृपा तुम्हारी, धन्यवाद !

.

आ जाती जीवन-प्यार लिए जब संध्या की बेला,
हर चैराहे पर लग जाता अभिसारों का मेला,

दुनिया के लांछन से सोया
जगा दिया खंडित फिर मेरा अभिमान;
कृपा तुम्हारी, धन्यवाद !

.

(54) छा गये बादल

.

तुम्हारी मद भरी मुसकान लख कर आ गये बादल !
तुम्हारे नैन प्यासे देख कर ये छा गये बादल !

.

नवेली ! पायलों से बज रही झंकार है झन-झन,
सदा यह झूमता प्रतिपल सुघढ़ सुंदर सुकोमल तन,
असह है यह तुम्हारे रूप का अब और आकर्षण,
नयन बंदी हुए जिसको निमिष भर देख कर केवल !

.

चमकता शुभ्र गोरे-लाल फैले भाल पर झूमर,
तुम्हारे केश घुँघराले हवा में उड़ रहे फर-फर,
झुके जाते स्वयं के भार से प्रति अंग नव सुंदर,
फिसलता जा रहा है वक्ष पर से फूल-सा आँचल !

.

तुम्हारा गान सुन, संसार सब बेहोश हो जाता,
बड़े सुख की नयी दुनिया बसा निश्चिंत सो जाता,
तुम्हारी रागिनी में डूब मन - जलयान खो जाता,
बहाती हो अजानी, स्नेह की धारा सरल छल-छल !

.

अमिट है याद से मेरी तुम्हारा वह मिलन - पनघट,
विकल होकर सुमुखि ! मैंने कहा जब 'हो बड़ी नटखट'!
उसी पल खुल गया था यह तुम्हारी लाज का घूँघट ,
बड़े मनहर व मादक थे तुम्हारे बोल वे निश्छल !

.

(55) नींद

.

आज मेरे लोचनों में  नींद घिरती आ रही है !

.

व्योम से आती हुई रजनी
मृदुल माँ-वत् करों से थपकियाँ देती,
नव-सितारों से जड़ित आँचल
बिछा है, आँख सुख की झपकियाँ लेतीं,
चंद्र-मुख से सित सुधा की धार झरती आ रही है !

.

सुन रहा हूँ स्नेह का मधुमय
तुम्हारा गीत कुसुमों और डालों से,
प्रतिध्वनित है आज पत्थर से
वही संगीत सरिता और नालों से,
रागिनी उर में  सुखद मद भाव भरती जा रही है !

.

बंद पलकों के हुए पट, पर
दिखायी दे रहा यह, पी रहा हूँ मैं,
नव पयोधर से किसी का दूध
शीतल, भान भी है यह, कहाँ हूँ मैं,
स्वस्थ मांसल देह छाया झूम गिरती आ रही है !

.

(56) दीप जला दो !

.

मेरे सूने घर में —
युग - युग का अँधियारा छाया है,
जीवन-ज्योति जली थी - सपना है
तुममें  जितना स्नेह  समाया  है
तब समझूंगा — मेरा अपना है

यदि ऊने अंतर में तुम दीप जला दो !

.

कल्पों से यह जीवन क्या ? - मरुथल
बना हुआ है जग का ऊष्मा - घर
एकाकी पथ, फिर उस पर मृग - जल
तब मानूंगा तुममें रस - सागर
यदि मेरे ऊसर - मन को नहला दो !

.

पल-पल पर आना-जाना रहता
केवल रेतीले तूफ़ानों का,
बनता क्या ? जो है वह भी ढहता;
समझूंगा मूल्य तुम्हारे गानों का
यदि सूखे सर-से मन को बहला दो !

.

सम्भव हो न सकेगा जीवित रहना
पल भर भी तन-मन मोम लता का,
है बस मूक प्रहारों को सहना
समझूंगा जादू कोमलता का
यदि पाहन-उर के व्रण सहला दो !

.

(57) आकुल-अन्तर

.

आज है बेचैन मन कुछ बात करने को प्रिये !

.

एकरस इतनी विलम्बित मौनता अब हो रही है भार,
जब सतत लहरा रहा शीतल रुपहला स्निग्ध पारावार
हो रहा बेचैन मन उन्मुक्त मिलने को प्रिये !

.

शुष्क नीरस सृष्टि में जब छा गये चारों तरफ़ नव बौर

भाग्य में मेरे अरे ! केवल लिखा है क्या अकेला ठौर ?
हो रहा बेचैन मन कुछ भेद कहने को प्रिये !

.

(58) मेरा चाँद

.

मेरा चाँद मुझसे दूर है !

.

सूने व्योम में रोती अकेली रात है,
चारों ओर से तम की लगी बरसात है,
इसलिए ही आज निष्प्रभ हर कुमुद का नूर है !

.

किस एकांत में जाकर तड़पता है सरल
भय है प्राण को भारी, न पीले रे गरल
क्योंकि ऊँचे भव्य घर में क़ैद है, मजबूर है !

.

ये आँखें क्षितिज पर आश से, विश्वास से,
निश्चल देखतीं हर रश्मि को उल्लास से,
क्योंकि यह है सत्य — उसमें चाह-मिलन ज़रूर है

.

(59) अमावस की अँधेरी में

.

नभ के किन परदों के पीछे आज छिपा है चाँद ?

.

मैं पूछ रहा हूँ तुमसे ओ
नीरव जलने वालांे तारो !
मैं पूछ रहा हूँ तुमसे ओ
अविरल बहने वाली धारो !
सागर की किस गहराई में, आज छिपा है चाँद ?

.

मैं पूछ रहा हूँ तुमसे ओ

मन्थर मुक्त हवा के झोको !
जिसने चाँद चुराया मेरा
उसको सत्वर भगकर रोको !
नयनों से दूर बहुत जाकर, आज छिपा है चाँद !
.
मैं पूछ रहा हूँ, तुमसे ओ
तरुओ ! पहरेदार हज़ारों,
चुपचाप खड़े हो क्यों ? अपने
पूरे स्वर से नाम पुकारो !
दूर कहीं मेरी दुनिया से, आज छिपा है चाँद !
.
(60) मिल गये थे हम
.
ज़िन्दगी की राह पर कुछ क्षणों को
मिल गये थे हम,
एकरसता मौनता का बोझ भारी
हो गया था कम !
.
उड़ गया छाया थकावट का, उदासी
का धुआँ गहरा,
पा तुम्हें मन-प्राण मरुथल पर उठी थी
रस लहर लहरा !
.
पर, बनी मंज़िल मनुज की क्या कभी भी —
राह जीवन की ?
क्या सदा को छा सकीं नभ में घटाएँ
सुखद सावन की ?
.
आज जाना है विरल बहुमूल्य कितनी

प्यार की घड़ियाँ,
गूँजती हैं  आज भी  रह-रह तुम्हारे
गीत की कड़ियाँ !
.
(61) अकारथ
.
दिन-रात भटका हर जगह
सुख-स्वर्ग का संसार पाने के लिए !
.
कलिका खिली या अधखिली
झूमी मधुप को जब रिझाने के लिए !
.
सुनसान में तरसा किया
तन-गंध-रस-उपहार पाने के लिए !
.
क्या-क्या न जीवन में किया
कुछ पल तुम्हारा प्यार पाने के लिए !
.
डूबा व उतराया सतत
विश्वास का आधार पाने के लिए !
.
रख ज़िन्दगी को दाँव पर
खेला किया, बस हार जाने के लिए !
.
(62) विवशता
.
दूर गगन से देख रहा शशि !
.
जगते - जगते बीत गयी है  आधी रात,
पर,पूरी हो न सकी अस्फुट मन की बात

भरे नयन से देख रहा शशि !

.

ऊपर से तो शांत दिखाई देते, प्राण,
पर, भीतर क़ैद बड़ा यौवन का तूफ़ान,
विरह-जलन से देख रहा शशि !

.

सारे नभ में बिखरी पड़ती है मुसकान,
पर, कितना लाचार अधूरा है अरमान,
बोझिल तन से देख रहा शशि !

.

(63) आकर्षण

.

जितने पास आता हूँ तुम्हारे इंदु
उतने ही सँभल तुम दूर जाते हो !

.

पहले ही बता दो ना, पहुँचने क्या नहीं दोगे ?
पहले ही अरे कह दो कि मेरा प्यार ना लोगे !
जितना चाहता हूँ ओ ! तुम्हें राकेश
उतने ही बदल तुम दूर जाते हो !

.

आओगे न क्या मेरे कभी एकांत जीवन मंे ?
क्या अच्छा नहीं लगता विहँसना स्नेह-बंधन में ?
जितना चाहता हूँ बाँधना ओ सोम !
उतने बन विकल तुम दूर जाते हो !

.

ऊपर से खड़े होकर निरन्तर देखते क्यों हो ?
किरणें रेशमी अपनी सँजो कर फेंकते क्यों हो ?
जैसे ही अकिंचन मैं उलझता भूल
वैसे ही सरल ! तुम दूर जाते हो !

.

(64) चाँद और पत्थर — 1

.

चाँद तुम पत्थर-हृदय हो !

.

व्यर्थ तुमसे प्यार करना,

व्यर्थ है मनुहार करना,

व्यर्थ जीवन की सुकोमल भावनाओं को जगाना,

जब न तुम किंचित सदय हो !

.

व्यर्थ तुमसे बात करना,

और काली रात करना,

प्राणघाती, छल-भरा, झूठा तुम्हारा स्नेह-बंधन;

चाहते अपनी विजय हो !

.

फेंक कर सित डोर गुमसुम,

देखते इस ओर क्या तुम ?

स्वर्ग के सम्राट,नभ-स्वच्छंद-वासी ! रे तुम्हें क्या -

सृष्टि हो - चाहे प्रलय हो ?

.

सत्य आकर्षण नहीं है,

सत्य मधु-वर्षण नहीं है,

सत्य शीतल रुपहली मुसकान अधरों की नहीं है !

तुम स्वयं में, आज लय हो !

.

(65) चाँद और पत्थर — 1

.

चाँद तुम पत्थर नहीं हो !

.

है तुम्हारे भी, हृदय कोमल,

स्नेह उमड़ा जा रहा छल-छल,

हो  बड़े भावुक,  बड़े चंचल,
इसलिए मेरे निकट हो; प्राण से बाहर नहीं हो !
.
राह  अपनी चल रहे हो तुम,
आँधियों में पल  रहे हो तुम,
शीत में हँस गल रहे हो तुम,
इसलिए कहना ग़लत है; तुम मनुज-सहचर नहीं हो !
.
हो किसी के  प्यार-बंधन  में,
हो किसी की  आस जीवन में,
गीत के स्वर हो किसी मन में,
सोच इतना ही मुझे है — हाय धरती पर नहीं हो !
.
(66) न जाने क्यों
.
मुझे मालूम है, यह चाँद मुझको मिल नहीं सकता,
कभी भी भूल कर स्वर्गिक-महल से हिल नहीं सकता,
चरण इसके सदा  आकाशगामी हैं,
रुपहले-लोक का यह मात्र हामी है,
न जाने क्यों उसे फिर भी हृदय से प्यार करता हूँ !
न जाने क्यों,  उसी की याद,  बारम्बार करता हूँ !
.
मुझे मालूम है,  यह चाँद  बाहों में  न  आयेगा,
कभी भी  भूल कर  मुझको न प्राणों में समायेगा,
अमर है  कल्पना का लोक रे इसका,
नहीं पाना किसी के हाथ के बस का,
न जाने कयों उसी पर व्यर्थ का अधिकार करता हूँ !
न जाने क्यों उसे फिर भी हृदय से प्यार करता हूँ !
.

मुझे मालूम है, यह चाँद कैसे भी न बोलेगा,
कभी भी भूल कर अपने न मन की गाँठ खोलेगा,
सरल इसके सुनयनों की न भाषा है,
समझने में निराशा-ही-निराशा है,
न जाने क्यों उसी से भावना-व्यापार करता हूँ!
न जाने क्यों उसे फिर भी हृदय से प्यार करता हूँ!
.
मुझे मालूम है यह चाँद वैभव का पुजारी है,
बड़ी मनहर गुलाबी स्वप्न-दुनिया का विहारी है,
व मेरे पंथ पर काँटे बिछे अगणित,
अभावों की हवाएँ आ गरजती नित,
न जाने क्यों उसी से राह का शृंगार करता हूँ !
न जाने क्यों उसे फिर भी हृदय से प्यार करता हूँ !
.
(67) साथ
.
कभी क्या चाँद का भी साथ छूटा है ?
.
रहेंगे हम जहाँ जा कर, वहाँ यह चाँद भी होगा,
हमारे प्राण का जीवित वहाँ उन्माद भी होगा,
बताओ तो किसी ने आज-तक क्या
चाँदनी का रूप लूटा है ?
.
हमारे साथ यह सुख के दिनों में मुसकरायेगा,
दुखी यह देख कर हमको पिघल आँसू बहायेगा,
बिछुड़ कर दूर रहने से, कभी भी
प्यार का बंधन न टूटा है !
.
हमारी नींद में आ यह मधुर सपने सजायेगा,

थके तन पर बड़े शीतल पवन से थपथपायेगा,
निरन्तर एक गति से ही बहेगा
स्नेह का जब स्रोत फूटा है !

.

(68) दुराव

.

चाँद को छिप-छिप झरोखों से सदा देखा किया
और अपनी इस तरह आँखें चुरायीं चाँद से !

.

चाँद को झूठे सँदेसे लिख सदा भेजा किया
और दिल की इस तरह बातें छिपायी चाँद से !

.

चाँद को देखा तभी मैं मुसकराया जान कर
और उर का यों दबाया दर्द अपना चाँद से !

.

लाख कोशिश की मगर मैं चाँद को समझा नहीं
और पल भर कह न पाया स्वर्ण-सपना चाँद से !

.

भूल करता ही गया अच्छा - बुरा सोचा नहीं
प्यार कर बैठा किसी के चिर-धरोहर चाँद से !

.

युग गुज़रते जा रहे खामोश, मैं भी मौन हूँ
क्योंकि अब बातें करूँ किस आसरे पर चाँद से !

.

(69) यह न समझो

.

यह न समझो कूल मुझको मिल गया
आज भी जीवन-सरित मँझधार में हूँ !

.

प्यार मुझको धार से

धार के हर वार से
प्यार है बजते हुए
हर लहर के तार से,
यह न समझो घर सुरक्षित मिल गया
आज भी उघरे हुए संसार में हूँ !
.
प्यार भूले गान से
प्यार हत अरमान से
ज़िन्दगी में हर क़दम
हर नये तूफ़ान से,
यह न समझो इंद्र - उपवन मिल गया
आज भी वीरान में, पतझार में हूँ !
.
खोजता हूँ नव-किरन
रुपहला जगमग गगन,
चाहता हूँ देखना
एक प्यारा-सा सपन,
यह न समझो चाँद मुझको मिल गया
आज भी चारों तरफ़ अँधियार में हूँ !
.
(70) तुमसे मिलना तो
.
तुमसे मिलना तो अब दूभर !
.
मूक प्रतीक्षा में कितने युग बीत गये,
चिर प्यासी आँखों के बादल रीत गये,
एकाकी जीवन के निर्जन पथ पर केवल पतझर-पतझर !
.
देख रहा हूँ सभी अपरिचित और नये,

वे जाने-पहचाने  सपने कहाँ गये ?
ढूँढ चुका अविराम सजग कोना-कोना जल-थल-अम्बर !
.
(71) आत्म-स्वीकृति
.
तुम इतनी पागल नहीं बनो !
.
जिसको समझ रही हो प्रतिपल, सरल-तरल भावों का निर्झर
वह  बोझिल दर्द भरा वंचित  चिर एकाकी  सूना  ऊसर,
अपने मन को वश में रक्खो,  यों इतनी दुर्बल नहीं बनो!
.
क्यों बड़ी लगन से देख रहीं - यह पत्थर है; मोम नहीं है,
अरी चकोरी ! सुबह-सुबह का सूरज है,  यह सोम नहीं है,
यों किसी अपरिचित के सम्मुख, तुम इतनी निष्छल नहीं बनो !
.
यह मेघ नहीं सुखकर शीतल, केवल  उष्ण धुँए का बादल,
इसमें, नादान अरे ! रह-रह खोजो मत जीवन का संबल,
सब मृग-जल है, इसके पीछे तुम इतनी चंचल नहीं बनो !
.
बड़े जतन से सजा रही हो तुम जिस उजड़ी फुलवारी को,
कैसे लहराये वह,  समझो  तनिक हृदय की लाचारी को,
अश्रु-भरी आँखों  में बसकर शोभा का काजल नहीं बनो !
.
(72) आँसुओं का मोल
.
मूल्य मेरे आँसुओं का  कब जगत पहचान पाया ?
.
देखता ही तो रहा वह,  आँसुओं की  धार अपलक,
दो नयन निर्मम लिए बस, स्नेह से हों रिक्त दीपक,
वेदना के स्वर मिलाकर किस मनुज ने गान गाया ?

.
कौन है जो सिसकियों का, मूक आहों का, मरण का
पंथ-सहचर ज़िन्दगी का, मिल गया हो ठीक मन का,
कौन है, जिसने हृदय की उलझनों से त्राण पाया ?
.
(73) बहने देना ....
.
बहने देना आँसू मेरे; किन्तु स्नेह-उपहार न देना !
.
पथ पर जब मैं रुक-रुक जाऊँ,
प्रति पग पर जब झुक-झुक जाऊँ
तूफ़ानों से लड़ते - लड़ते
झंझा में फँस कर थक जाऊँ
गिर-गिर चलने देना मुझको, क्षण भर भी आधार न देना !
.
ज्वार उठे सागर में चाहे,
नौका फँसे भँवर में चाहे,
देख घिरी घनघोर घटाएँ
धड़कन हो अन्तर में चाहे,
बढ़ने देना मुझको आगे, हाथों में पतवार न देना !
.
अंधकारमय जीवन-पथ पर,
कुश-कंटकमय जीवन-पथ पर
संबलहीन अकेला केवल,
अपना अन्तस्तल ज्योतित कर
मैं उठता-गिरता जाऊंगा, सुलभ-ज्योति संसार न देना !
.
(74) विनाश
.
मैं मिटता जाता हूँ प्रतिपल !

.

तारे छिप जाते अम्बर में,
लहरें मिट जातीं सागर में,
वीणा के स्वर लय हो जाते
बहते मारुत के सर-सर में,
काल-धार में एक दिवस, मैं भी लय हो जाऊंगा चंचल !

.

कुसुमों का दो-दिन का यौवन,
दो-दिन का भ्रमरों का गायन,
जब दो-दिन में ही सीमित है
उनकी इच्छाओं की धड़कन,
दो-दिन में मेरी भी काया नश्वर, हो जायेगी दुर्बल !

.

दिन छिपता उड़ती धूलि गगन,
निशि ढलती जाती है प्रतिपल,
युग बीत रहे अपनी गति से
होता रहता जग - परिवर्तन,
मैं भी जीवन-पथ पर चलता जाता लेकर अंतर-हलचल !

.

(75) विकास

.

मैं खिलता जाता हूँ प्रतिपल !

.

तरुवर की डालों पर कलियाँ,
नभ में झिलमिल तारावलियाँ,
धीरे-धीरे आ खिल जातीं, लेकर जीवन की ज्योति नवल !

.

सूखी सरिता छल-छल जल भर
बूँदें मरुथल टप-टप पा कर,

जब जीवन पा जाता कण-कण, मैं भी भर लेता उर में बल
.
भर कर मीठा हास जगत में,
आया नव मधुमास जगत में,
मेरे स्वर भी बोल उठे, जब कूक उठी पेड़ों पर कोयल !
.
(76) रस-संचार
.
आज रस संचार !
.
अश्रु के ले सिन्धु को
दुःख उर से खो गया,
यह युगों के बोझ का
भार हलका हो गया,
गीत मन ने गा लिया, गूँजती झंकार !
.
धूप जीवन की गयी,
शांत प्राणों की जलन,
बादलों की छाँह में
मिल गया शीतल पवन,
प्रेम प्रिय का पा गया, मौन कर स्वीकार !
.
लय निमिष में हो गये
कष्ट सब दिन-रात के,
हो गया अन्तर हरा
वाटिका-सम पात के,
सुख चिरन्तन पा गया, स्वर्ग कर साकार !
.
(77) री हवा !
.

री हवा !
गीत गाती आ,
सनसनाती आ !
डालियाँ झकझोरती
रज को उड़ाती आ !
.
मोहक गंध से भर
प्राण पुरवैया
दूर उस पर्वत-शिखा से
कूदती आ जा !
.
ओ हवा !
उन्मादिनी यौवन भरी
नूतन हरी इन पत्तियों को
चूमती आ जा !
.
गुनगुनाती आ,
मेघ के टुकड़े लुटाती आ !
.
मत्त बेसुध मन
मत्त बेसुध तन
.
खिलखिलाती, रसमयी
जीवनमयी
उर-तार झंकृत
नृत्य करती आ !
री हवा !
.

.
चाँदनी छिटकी हुई बेछोर,
नाचता है उल्लसित मन-मोर,
नींद आँखों से उलझ कर हो गयी है दूर !
.
प्राण ने सुखमय नया संसार,
आज पलकों में किया साकार,
मूक नयनों का तभी यह बढ़ गया है नूर !
.
है बड़ी मोहक रुपहली रात,
दूर पूरब से बहा है वात,
व्योम में छाया हुआ निशि का नशा भरपूर !
.
प्राणमय कितना निशा का गान,
सुन जिसे रहता नहीं है ध्यान,
है छिपा कोई कहीं पर सृष्टि-भेद ज़रूर !
.
(79) हेमन्त
.
भीगी - भीगी भारी रात
नींद न आती सारी रात !
.
घोर अँधेरा चारों ओर,
दूर अभी तो लोहित भोर,
थमा हुआ है सारा शोर,
ऐसे मौसम में चुप क्यों हो,
कहो न कोई मन की बात !
.
कुहरा बरस रहा चुपचाप,
अतिशय उतरा नभ का ताप,

व्योम-धरा का मौन मिलाप,
ऐसे लमहों में पास रहो,
थर-थर काँपेगा हिम गात !

.

नीरवता का मात्रा प्रसार,
तरुदल हिलते खेतों पार,
जब-तब बज उठते हैं द्वार,
खोल गवाक्ष न झाँको बाहर
मादक पवन लगाये घात !

.

(80) घटाएँ

.

छा गये सारे गगन पर
नव घने घन मिल मनोहर,
दे रहे हैं त्रस्त भू को आज तो शत-शत दुआएँ !
देख लो, कितनी अँधेरी हैं घटाएँ !

.

कर रहा है व्योम गर्जन,
मंद्र ध्वनि से, वाद्य-सा बन,
चाहता देना सुना जो आज सारी स्वर-कलाएँ !
देख लो, ये व्योम-चेरी हैं घटाएँ !

.

अरुक बरसो बिन्दु जल के
तीव्र गति से, ना कि हलके,
विश्व भर में वृष्टि कर दो, दूर हों सारी बलाएँ !
देख लो, कितनी घनेरी हैं घटाएँ !

.

(81) गाओ गीत

.

तुम कहते, 'गाओ आज गीत' !
है पर्व मिलन का शुभ पुनीत !
.
जीवन में सुखमय लहरों का कंपन बरबस भर देते हो,
और तभी आ चुपके-चुपके उर-धन-राशि चुरा लेते हो,
खो जाते भाव उदासी के, तुम दुःख भुला देते अतीत !
.
तुम मधु-पूरित शीतल निर्झर हो मेरी जीवन-सरिता के,
छा जाते हो प्रतिपल मेरे प्राणों के स्वर में कविता के,
मूक पराजय की बेला में, मैं जाता तुमको देख जीत !
.
(82) तुम
.
तुम मेरे जीवन-तरु के हो कोमल-कोमल किसलय !
.
तुमसे मेरे यौवन की होती है पहचान प्रखर,
तुमसे मुरझाये मुख का जाता है सौन्दर्य निखर,
देते मेरे जीने का हिल-हिल मिल-मिल कर परिचय !
.
आँधी-पानी में, माना मैं जड़ से हिल जाता हूँ,
पर, प्रतिपल अन्तरतम से गीत तुम्हारा गाता हूँ,
सतत तुम्हारे ही बल पर लड़ता रहता बन निर्भय !
.
(83) तुम्हारी माँग का कुंकुम
.
उड़ रहा है आज यह कैसे
तुम्हारी माँग का कुंकुम !
.
बहुत ही पास से मैंने तुम्हें देखा
न थी मुख पर कहीं उल्लास की रेखा,

न जाने क्यों रहीं केवल खड़ी तुम पद-जड़ित गुमसुम !
.
मिला है जब तुम्हें यह गीतमय जीवन
बताओ क्यों हुआ विक्षुब्ध फिर तन-मन
न जाने किस भविष्यत् के विचारों से व्यथित हो तुम !
.
बुझा-सा हो रहा मुख-चंद्र चमकीला,
कि है प्रति श्वास भारी, रंग तन पीला,
न जाने आज क्यों हर वाटिका में जीर्ण-शीर्ण कुसुम !
.
(84) तुम्हारी याद
.
बस, तम्हारी याद मेरे साथ है !
.
आज यह बेहद पुरानी बात की
ध्यान में फिर बन रही तस्वीर क्यों ?
आज फिर उस विदा की रात-सा
आ रहा है नयन में यह नीर क्यों ?
सिर्फ़ जब उन्माद मेरे साथ है !
.
कह रही है हूक भर यह चातकी
'प्रेम का रे पंथ है कितना कठिन,
विश्व बाधक देख पाता है नहीं
शेष रहती भूल जाने की जलन !
बस, यही फ़रियाद मेरे साथ है !
.
पर, तुम्हारी याद जीवन-साध की
वह अमिट रेखा बनी सिन्दूर की,
आज जिसके सामने किंचित नहीं

प्राण को चिन्ता तुम्हारे दूर की,
देखने को चाँद मेरे साथ है !

.

(85) याद

.

आज बरसों की पुरानी आ रही है याद !

.

सामने जितना पुराना पेड़ है
उतनी पुरानी बात,
हो रही थी जिस दिवस आकाश से
रिमझिम सतत बरसात,
छिप गया था श्यामवर्णी बादलों में चाँद !

.

तुम खड़ी छत पर, अँधेरे में सिहर
कर गा रही थीं गीत,
पास आया था तभी मैं भी, मिले
थे स्नेह से दो मीत,
आज नयनों में उसी का शेष है उन्माद !

.

(86) सहसा

.

आज तुम्हारी आयी याद,
मन में गूँजा अनहद नाद!
बरसों बाद
बरसों बाद!

.

साथ तुम्हारा केवल सच था,
हाथ तुम्हारा सहज कवच था,
सब कुछ पीछे छूट गया,पर

जीवित पल-पल का उन्माद!

.

बीत गये युग होते-होते,
रातों-रातों सपने बोते,
लेकिन उन मधु चल-चित्रों से
जीवन रहा सदा आबाद!

(87) प्रतीक्षा में

.

प्रतीक्षा में सितारे खो गये !

.

बितायी थी अकेली रात जिनको गिन,
बने थे धड़कनों के जो सबल सम्बल,
किरन पूरब दिशा से ला रही अब दिन,
निराशा और आशा का उड़ा आँचल,
निरन्तर आँसुओं की धार से
छायी गगन की कालिमा को धो गये !

.

नयन पथ पर बिछे निशि भर रहे जगते,
सरल उर - स्नेह से जलता रहा दीपक,
जलन पूरित सभी भावी निमिष लगते,
युगों से कर रहा मन साधना अपलक,
हृदय में आ प्रिये ! उठते सतत
अच्छे-बुरे ये भाव रह-रह कर नये !

.

क्षितिज की ओर फैले पंथ से चल कर,
कभी हँसते हुये तुम पास आओगे,
बना विश्वास, जीवन के अरे सहचर !
नहीं तुम इस तरह मुझको भुलाओगे,

पपीहे ! कह वियोगी के सभी
अब तो अभागे कल्प पूरे हो गये !

.

(88) परिणाम

.

यह युगों की साधना का आज क्या परिणाम है ?

.

मैं तुम्हारे रूप का साधक,
जोहता शोभा सदा अपलक,
पर, गया मिट सुख-सबेरा, ज़िन्दगी की शाम है !

.

स्वप्न में तुमको बुलाया था,
कक्ष अन्तर का सजाया था,
पर, युगों से स्नेह-निर्झर बह रहा अविराम है !

.

श्रवण आहट पर टिके मेरे,
नयन-युग पथ पर बिछे मेरे,
पर, नहीं आभास तक का आज किंचित नाम है !

.

(89) कामना

.

कामना मेरी !

.

गगन-सी बन,
विकल सिहरन,
प्राण में रह कर समायी री नहीं पाती
सघन नव बादलों-सी कल्पना मेरी !

.

सरल दीपक
चमक अपलक,

वेदना के स्वर हृदय में आज तो बंदी
सजी है पूर्ण जीवन-अर्चना मेरी !
.
जलन खोयी,
अमृत धोयी,
जल रही अविरल अकम्पित लौ हृदय की यह
सतत उद्देश्य - लक्षित साधना मेरी !
.
(90) अप्रतिहत
.
मैं नहीं दुर्भाग्य के सम्मुख झुकूंगा
आज जीवन में हुआ असफल भले ही !
.
एक पल भी साधना की भावना सोयी नहीं,
और जाऊँ हार, ऐसी बात भी कोई नहीं,
मैं नहीं सुनसान राहों पर थकूंगा
दूर, बेहद दूर हो मंज़िल भले ही !
.
आज छाया है अमावस-सा अँधेरा सब तरफ,
पर, अभी कल मुसकराएगा सबेरा सब तरफ,
मैं न मन की पंगु दुविधा में रुकूंगा
पास में चाहे न हो सम्बल भले ही !
.
(91) न रुकते चरण
.
अँधेरी निराशा-निशा में उषा की दमकती न आशा-किरण !
.
गगन में नहीं अब चमकते सितारे कहीं,
धरा के सभी दूर डूबे किनारे कहीं,
चला जा रहा, पर सतत बेसहारे कहीं,

विहग  उड़ हृदय के सभी आज हारे नहीं,
कठिन कंटकों से भरी राह दुर्गम, कहीं पर न रुकते चरण !
.
उगलती चली पंथ की हर कहानी गरल,
मिटाती चलीं आँधियाँ सब सुरक्षित महल,
सतत पर  प्रगतिवाह-उन्मुक्त-जीवन-सबल,
हुयी साधना प्राण की मम न किंचित विफल,
विरोधी अमंगल समय की सुलगती प्रखरतम  बुझायी जलन !
.
चमक कर, गरज कर डरातीं घटाएँ अगम,
निरन्तर उलझती गयी हर डगर बन विषम,
कि बढ़ता गया घिर धुआँ-सा तिमिर हर क़दम,
व  बुझते गये राह - संकेत  दीपक  सहम,
प्रलय रात, पर आज भय से कहीं  डबडबाये न मेरे नयन !
.
(92) मूरत अधूरी
.
तय है कि अब यह ज़िन्दगी
मुहलत नहीं देगी,
अब और तुमको ज़िन्दगी
फुरसत नहीं देगी !
.
गुज़रे दिनों की याद कर,कब-तक दहोगे तुम ?
विपरीत  धारों से उलझ, कितना  बहोगे तुम ?
रे  कब-तलक तूफ़ान के  धक्के सहोगे तुम ?
.
यों खेलने की, ज़िन्दगी
नौबत नहीं देगी,
अब और तुमको ज़िन्दगी

क़ूवत नहीं देगी !

.

साकार हो जाएँ  असम्भव कल्पनाएँ सब,
आकार पा जाएँ  चहचहाती चाहनाएँ सब,
अनुभूत हों मधुमय उफ़नती वासनाएँ सब,

.

यह ज़िन्दगी ऐसा कभी
जन्नत नहीं देगी,
यह ज़िन्दगी ऐसी कभी
क़िस्मत नहीं देगी !

.

(93) असह

.

बहुत उदास मन
थका-थका बदन
\बहुत उदास मन !

.

उमस भरा गगन
थमा हुआ पवन
घुटन घुटन घुटन !

.

घिरा तिमिर सघन
नहीं कहीं किरन
भटक रहे नयन !

.

बहुत निराश मन
बहुत हताश मन
जलन जलन जलन !

.

(94) मजबूर

.
ज़िन्दगी जब दर्द है तो
हर दर्द सहने के लिए
मजबूर हैं हम !
.
राज़ है यह ज़िन्दगी जब
खामोश रहने के लिए
मजबूर हैं हम !
.
है न जब कोई किनारा
तो सिर्फ़ बहने के लिए
मजबूर हैं हम !
.
ज़िन्दगी यदि ज़लज़ला है
तो टूट  ढहने के लिए
मजबूर हैं हम !
.
आग से जब घिर गये हैं
अविराम  दहने के लिए
मजबूर हैं हम !
.
सत्य कितना है भयावह
हर झूठ कहने के लिए
मजबूर हैं हम !
.
(95) सहारा
.
नहीं साथ मैं  चाहता हूँ तुम्हारा,
भले ही मिटे ज़िन्दगी का सहारा !
.

जिये यदि किसी की दया माँग
तो क्या जिये ?
कभी भूल चिन्ता करूंगा न
अपने लिये,
ज़रा भी न अफ़सोस, चाहे बुझे यह
गगन में चमकता अकेला सितारा !
.
हँसूंगा व जीवित रहूंगा
सफलता बिना,
निखरता मनुज का न जीवन
विफलता बिना,
भरोसा बड़ा ही मुझे है कि बहती
हुयी यह रुकेगी नहीं प्राण-धारा !
.
(96) जीवन नहीं
.
जीवन नहीं, जीवन नहीं !
.
सौभाग्य ही केवल न मन की साध है,
रोना यहाँ दुर्भाग्य पर अपराध है,
यह भूलना —
क्षण आपदाओं के महान भविष्य के आभास;
यदि इतना नहीं विश्वास
तो ज़िन्दगी का वह कभी
दर्शन नहीं, दर्शन नहीं !
.
सपने नयन-आकाश में छाते रहें,
अपने लिए ही गीत जो गाते रहें,
यह भूलना —

परमार्थ, सेवा-भावना ही मानवी आधार !
यदि इतना नहीं स्वीकार
तो श्वास तेरी बद्ध, उर
धड़कन नहीं, धड़कन नहीं !

.

उद्यान में केवल न खिलते फूल हैं,
उड़ती हुई भी प्रति चरण पर धूल है,
यह भूलना —
अवरुद्ध बंधन-ग्रस्त जीवन से सदा विद्रोह,
यदि निज प्राण का है मोह
तो शक्ति का उन्माद क्या,
यौवन नहीं, यौवन नहीं !

.

(97) हमें यह पता है —

.

रुकावट हटाते हुए हम चलेंगे,
अँधेरा मिटाते हुए हम चलेंगे,
हमें यह पता है —
उजाले में बिजली कभी चमचमाती नहीं है !

.

सजग रह सतत आज बढ़ते रहेंगे,
इमारत नयी एक गढ़ते रहेंगे,
हमें यह पता है —
जवानी मनुज की कभी लड़खड़ाती नहीं है !

.

ठिठक कर रुकेंगी विरोधी हवाएँ,
फिसल कर गिरेंगी सभी आपदाएँ,
हमें यह पता है —
कि हिम्मत की साँसें कभी व्यर्थ जाती नहीं हैं !

.

## (98) साथी

.

जो जीवन की विपदाओं को हँस-हँस झेल लिया करते है —
केवल वे मेरे साथी हैं !

.

शूल-ग्रस्त, बीहड़, पथरीली, शून्य डगर पर बड़ा अँधेरा,
पर, चलते नयनों में भर जो जगमग करता नया सबेरा,
निर्भय बन जीवन और मरण से जो खेल किया करते हैं —
केवल वे मेरे साथी हैं !

.

जब सिर पर क्रोधित हो-हो कर गरजा करतीं तेज़ हवाएँ,
हो जातीं सभी विफल, भावी की जब आशा-आकांक्षाएँ,
तब जो उस घोर निराशा में पापड़ बेल लिया करते हैं —
केवल वे मेरे साथी हैं !

.

बाधाओं से टकरा क्षण-भर जो सीख न पाये हैं रुकना,
मंज़िल पा जाने से पहले जो जान न पाये हैं थकना,
जीवन भर मन की तरुणाई से जो मेल किया करते हैं —
केवल वे मेरे साथी हैं !

.

## (99) यह नहीं मंज़िल ...

.

यह नहीं मंज़िल तुम्हारी !

.

और चलना है तुम्हें,
और जलना है तुम्हें,
ज़िन्दगी की राह पर करना अभी संघर्ष भारी !

.

और पीना है गरल,

है तभी जीना सफल,,
यह तुम्हारी ही परख की आ गयी है आज बारी !
.
सामने  तूफ़ान है,
पर, बड़ा इंसान है,
पैर से जिसने मिटा दी संकटों की सृष्टि सारी !
.
यह मुझे विश्वास है,
बोलता  इतिहास है,
मैं वही हूँ, काँपती जिससे काया ध्वंसकारी !
.
(100) स्वर-साधना
.
सतत  आश-विश्वास के स्वर
समय-बीन पर बजाता रहा हूँ !
.
डगर पर घिरा है अँधेरा सघन,
भयावह निखिल आज वातावरण,
घटाएँ  घिरीं और गरजा गगन,
मरण की चिता पर विजय-गान गाता रहा हूँ !
.
समेटो मनुज प्राण-साहस  अमर,
अनल में तपो जो लगा है प्रखर,
जवानी  बड़ी  जायगी यों निखर,
सुनाकर सबल स्वर जगत को जगाता रहा हूँ !
.
(101) भोर
.
क्या अभी भी रात्रि है कुछ शेष ?
.

स्तब्धता, लगता कि सोया भोर,
देखतीं आँखें क्षितिज की ओर,
सृष्टि का बदला नहीं क्यों वेष ?
.
दे रही ऊषा नहीं वरदान,
मौन विहगों का अभी तो गान,
उठ पड़े, पर जाग मेरे प्राण,
सुन रहा जीवन नया संदेश !
.
स्वप्न से मुझको नहीं है मोह,
कर्मरत मानव - हृदय की टोह,
जागता मेरा रहे नव देश !
.
(102) प्राण-दीप
.
रात भर जलता रहा यह दीप प्राणों का अकेला !
.
वेग लकर नाश का आया पवन था,
शक्ति के उन्माद में गरजा गगन था,
दीप,पर अविराम जलने में मगन था,
आ नहीं जब तक गयी संसार में नव-स्वर्ण बेला !
.
रात भर हँस-हँस सतत जलता रहा है,
आँधियों के बीच भी पलता रहा है,
आततायी का अहम् दलता रहा है,
मूक, हत, भयभीत मानव को दिया जगमग उजेला
.
(103) परिचय
.
स्नेह की मधु-धार हूँ मैं !

.
पास आये जो न मेरे, दूर का परिचय रखा बस,
भावना से हीन समझा, की उपेक्षा व्यंग्य से हँस,
जान पाये वे भला कब प्रेम-पारावार हूँ मैं !
.
देह निर्बल देख कर, जो एक उड़ती-सी नज़र से
फेर कर मुख, हो गये उस क्षण अलग मेरी डगर से,
जान पाये वे भला कब शक्ति का संसार हूँ मैं !
.
मुसकराया मैं न किंचित; क्योंकि था अति क्षुब्ध जीवन,
इसलिए जो लोग मुझको है समझते मूक पाहन,
जान पाये वे भला कब बीन की झंकार हूँ मैं !
.
कूल ही पर छोड़ मुझको चल पड़े जो नाव ले कर,
ज्वार-लहरों में गये फँस अब गरजता सिंधु जिन पर,
जान पाये वे भला कब मुक्ति की पतवार हूँ मैं !
.
(104) ज्योति-पर्व
.
मिट्टी के लघु-लघु दीपों से जगमग हर एक भवन !
.
अँधियारे की लहरों से भूमि भरी,
पर, उस पर तिरती झलमल ज्योति तरी,
जलना है, चाहे हो जाये तारक-शशि हीन गगन !
.
जग पर छायी धूमिल वाष्प असुन्दर,
पर, बहता है अविरल स्नेह-समुन्दर,
युग के मन-मरुथल में तुमको रहना है भाव-प्रवण !
.
विशृंखल तेज़ प्रभंजन से संसृति,

पर, मुसकाती संग नयी बन आकृति,
टूटेगा बाँध प्रलय का जब हर नूतन सृष्टि चरण !
.
कोलाहल हर कोने से फूट रहा,
अब तो सपनों का बंधन टूट रहा,
खो जायेगा नव-जीवन की हलचल में क्षीण मरण !
.
(105) ज्वार और नाविक
.
नाव नाविक खे रहा है !
.
सिन्धु - उर को चीर अविरल दौड़तीं लहरें भयंकर,
सनसनाती हैं हवाएँ उग्र स्वर से ठीक सर पर,
छा रहा नभ में सघन तम इस क्षितिज से उस क्षितिज तक,
पास हिंसक जन्तु कोई साँस लम्बी ले रहा है !
.
दूर से आ मेघ गहरे घिर रहे क्षण-क्षण प्रलय के,
घोर गर्जन कर दबाते स्वर सबल आशा विजय के,
घूरती अवसान बेला, मृत्यु से अभिसार है, पर
अटल साहस ले सतत बढ़ यह चुनौती दे रहा है !
.
(106) जिजीविषा
.
जी रहा है आदमी
प्यार ही की चाह में !
.
पास उसके गिर रही हैं बिजलियाँ,
घोर गह-गह कर घहरती आँधियाँ,
पर, अजब विश्वास ले
सो रहा है आदमी

कल्पना की छाँह में !

.

पर्वतों की सामने ऊँचाइयाँ,
खाइयों की घूमती गहराइयाँ,
पर, अजब विश्वास ले
चल रहा है आदमी
साथ पाने राह में !

.

बज रही हैं मौत की शहनाइयाँ,
कूकती वीरान हैं अमराइयाँ,
पर, अजब विश्वास ले
हँस रहा है आदमी
आँसुओं में, आह में !

.

(107) अपराजित

.

हो नहीं सकती पराजित युग-जवानी !

.

संगठित जन-चेतना को,
नव-सृजन की कामना को,
सर्वहारा-वर्ग की युग-युग पुरानी साधना को,
आदमी के सुख-सपन को,
शांति के आशा-भवन को,
और ऊषा की ललाई से भरे जीवन-गगन को,
मेटने वाली सुनी है क्या कहानी ?

.

पैर इस्पाती कड़े जो,
आँधियों से जा लड़े जो,
हिल न पाये एक पग भी पर्वतों से दृढ़ खड़े जो,

शत्रु को ललकारते हैं,
जूझते हैं, मारते हैं,
विश्व के कर्तव्य पर जो ज़िन्दगी को वारते हैं,
कब शिथिल होती, प्रखर उनकी रवानी !

.

शक्ति का आह्वान करती,
प्राण में उत्साह भरती,
सुन जिसे दुर्बल मनुज की शान से छाती उभरती,
जो तिमिर में पथ बनाती,
हर दिशा में गूँज जाती,
क्रांति का संदेश नूतन जा सितारों को सुनाती,
बंद हो सकती नहीं जन-त्राण वाणी !

.

(108) नव-निर्माण

.

मैं निरन्तर राह नव-निर्माण करता चल रहा हूँ,
और चलता ही रहूंगा !

.

राह — जिस पर कंटकों का जाल, तम का आवरण है,
राह — जिस पर पत्थरों की राशि, अति दुर्गम विजन है,
राह — जिस पर बह रहा है टायफूनी-स्वर प्रभंजन,
राह — जिस पर गिर रहा हिम, मौत का जिस पर निमंत्रण,
मैं उसी पर तो अकेला दीप बनकर जल रहा हूँ,
और जलता ही रहूंगा !

.

आज जड़ता-पाश, जीवन बद्ध, घायल युग-विहंगम,
फड़फड़ाता पर, स्वयं प्राचीर में फँस, जानकर भ्रम,
मौन मरघट स्तब्धता है, स्वर हुआ है आज कुंठित,
सामने बीहड़ भयातंकित दिशाएँ कुहर गुंठित,

विश्व के उजड़े चमन में फूल बन कर खिल रहा हूँ,
और खिलता ही रहूंगा !

.

(109) बढ़ते चलो

.

राह पर बढ़ते चलो !

.

दूर मंज़िल है तुम्हारी,
पर, क़दम होंगे न भारी,
आज तक युग-जवानी ने कभी हिम्मत न हारी !
आँधियों से जूझने वालो! निडर हँस-हँस प्रखर बढ़ते चलो!

.

बल अमिट विश्वास का है,
बल अतुल इतिहास का है,
बल अथक भावी जगत में फिर नये मधुमास का है,
ओ युवक! निज रक्त से नव-दृढ़ इमारत विश्व में गढ़ते चलो!

.

तम बिखरता जा रहा है,
नव सबेरा आ रहा है,
सृष्टि का कण-कण सृजन का गीत अभिनव गा रहा है,
इसलिए तुम भी नये युग की प्रतिष्ठा के लिए लड़ते चलो !

.

(110) विश्वास

.

बढ़ो विश्वास ले, अवरोध पथ का दूर होएगा !

.

तुम्हारी ज़िन्दगी की आग, बन अंगार चमकेगी,
अँधेरी सब दिशाएँ रोशनी में डूब दमकेंगी,
तुम्हारे दुश्मनों का गर्व चकनाचूर होएगा !

.

सतत गाते रहो वह गीत जिसमें हो भरी आशा,
बताये लक्ष्य की दृढ़ता तुम्हारी आँख की भाषा,
विरोधी हार कर फिर तो तुम्हारे पैर धोएगा !
.
मुसीबत की शिलाएँ सब चटक कर टूट जाएंगी,
गरजती आँधियाँ दुख की विनत हो धूल खाएंगी,
तुम्हारे प्रेरणा-जल से मनुज सुख-बीज बोएगा !
.
(111) अंध-काल
.
सावधान पहरुओ !
सावधान !
.
छा रहे अनेक दैत्य
छीनने स्वतंत्रता मनुष्य की,
वेगवान अंधकार
लीलने किरण-किरण भविष्य की,
सावधान सैनिको !
सावधान ।
.
आज घिर रहीं प्रगाढ़
रक्त-वर्षिणी भयान बदलियाँ,
व्योम में कड़क रहीं
विनाशिनी अधीर क्रूर बिजलियाँ,
विश्व-शान्ति रक्षको !
सावधान !
.
(112) जागते रहना
.

जागते रहना, जगत में भोर होने तक !

.

छा रही चारों तरफ़ दहशत,
रो रही इंसानियत आहत,
वार सहना, संगठित जन-शोर होने तक !

.

मुक्त हो हर व्यक्ति कारा से,
जूझना विपरीत धारा से,
जन-विजय संग्राम के घनघोर होने तक !

.

मौत से लड़ना, नहीं थकना,
अंत तक बढ़ना, नहीं रुकना,
हिंसकों के टूटने कमज़ोर होने तक !

.

(113) सुर्खियाँ निहार लो

.

नये विचार लो !
समाज की गिरी दशा सुधार लो ,
सुधार लो !

.

रुका प्रवाह फिर बहे,
सप्राण गीति-स्वर कहे,
हृदय अपार स्नेह-धन
भरें उठें असंख्य जन,
प्रभात को धरा जगो पुकार लो,
पुकार लो !

.

वतन सुसंगठित रहे,
न एक जन दमित रहे,

न भूख-प्यास शेष हो,
बना नवीन वेष हो,
समय बहाल, सुर्खियाँ निहार लो,
निहार लो !
.
विभोर हर्ष-धार में,
सफ़ेद लाल प्यार में,
बहो, बहो, बहो, बहो !
मनुष्यता की जय कहो,
बनी नयी कुटीर है, विहार लो,
विहार लो !
.
(114) युग-विहग
.
शून्य नभ में युग-विहग तुम
एक गति से ही उड़ोगे,
तुम उड़ोगे !
.
रुक नहीं सकते कभी भी
पंख उठते और गिरते ही रहेंगे,
थक नहीं सकते कभी भी,
राह पर आ मेघ घिरते ही रहेंगे,
विश्व को संदेश नूतन
मुक्ति का दे, तुम बढ़ोगे,
तुम बढ़ोगे !
.
अग्नि-पथ पर, स्वस्थ मन से,
आत्म-सम्बल के सहारे और निर्भय,
पथ-प्रदर्शक, ज्ञान-दीपक,

नव-सृजन से, सर्वहारा वर्ग की जय,
युग-विरोधी शक्तियों को
तुम चुनौती दे चढ़ोगे,
तुम चढ़ोगे !

.

(115) स्थितियाँ और द्वन्द्व

.

निश्चिन्त भी, भयभीत भी !

.

यह ज़िन्दगी जब दाँव पर,
संघर्ष है प्रति पाँव पर,
नव भैरवी भी बज रही,
रुकना न सम्भव है कहीं,
है हार भी औ' जीत भी !

.

हम सुन रहे हैं राग सब,
अनुराग और विराग सब,
कोई बुलाता - लौट आ,
कोई सजाता कह - 'विदा' !
रोदन करुण भी, गीत भी !

.

शिव में अशिव आभास भी,
छलना जहाँ; विश्वास भी,
अभिशाप भी वरदान है,
मिट्टी निरीह महान् है,
अपवित्र और पुनीत भी !

.

ललकारता है कौन यह ?
पुचकारता है कौन यह ?

मानव - विरोधी द्वन्द्व में,
मानव - सदा आनन्द में,
यह शत्रु भी है मीत भी !
.
(116) बदलता युग
.
लो बदलता है ज़माना !
.
ज्वाल जग में लग गयी है,
आग जीवन की नयी है,
जल रहा है जीर्ण जर्जर - टूट मिटता सब पुराना !
.
ध्वंस की लपटें भयंकर,
छा रहीं सारे गगन पर,
वेग अंधाधुंध है; जिसका असम्भव है दबाना !
.
बढ़ रहा प्रत्येक जन-जन,
रोशनी में मुक्त कन-कन,
वास्तविकता सामने आयी, न अब कोई बहाना !
.
रोष इससे तुम करो ना,
द्रोह साँसें भी भरो ना,
यह सतत बढ़ता रहेगा; व्यर्थ काँटों को बिछाना !
.
(117) कहाँ अवकाश ?
.
हमको कहाँ अवकाश है ?
.
जब मौत से हम लड़ रहे,
प्रतिपल प्रगति कर बढ़ रहे,

ये राह के  कंटक  सभी
लो धूल में अब गड़ रहे,
करना अँधेरे का हमें बढ़कर अभी ही नाश है !
.
हमने न देखे शूल भी,
हमने न देखी धूल भी,
हमने न देखे  राह के
हँसते हुए मधु फूल भी,
हमने न जाना प्यार क्या औ' मोह का क्या पाश है !
.
हम हैं नहीं जो कल रहे,
हम चाल अपनी चल रहे,
क्या हार में; क्या जीत में
हम एक-से  प्रतिपल रहे,
दुनिया बदलने के लिए अभिनव अटल विश्वास है !
.
(118) विश्व-श्री
.
देश-देश की स्वतंत्रता अमर रहे !
.
प्राण से  अधिक
अपार प्रिय हमें स्वतंत्रता,
देश-प्रेम के लिए
कहीं नियत न अर्हता,
लोकतंत्र-भावना सदा  प्रखर रहे !
.
विश्व के असंख्य जन,
अभेद्य हैं,  समान हैं,
भाव एक हैं,  यदपि

अनेक  राष्ट्र-गान हैं,
साम्य-कामना ज्वलंत प्रति प्रहर रहे !
.
त्याज्य: जो मनुष्य की
मनुष्यता  दहन  करे,
ग्राह्य: जो  उदार
मानवीयता  वहन करे,
सर्व-धर्म-प्रेम की  प्रवह लहर रहे !
.
(118) जनतंत्र-आस्था
.
जनतंत्र के उद्घोष से गुंजित दिशाएँ !
.
आज जन-जन अंग शासन का,
बढ़ गया है मोल  जीवन  का,
स्वाधीनता के प्रति समर्पित भावनाएँ !
.
अब नहीं तम सर उठाएगा,
ज्योति से नभ जगमगाएगा,
उद्देश्य-प्रेरित  दृढ़  हमारी  धारणाएँ !
.
मूक होगी रागिनी दुख की,
मूर्त होगी कामना सुख की,
अब दूर होंगी हर तरह की विषमताएँ !
.
(120) गण-तंत्र
.
गणतंत्र-दिवस  की स्वर्णिम
किरणों को मन में भर लो !
.

आलोकित हो अन्तरतम,
गूँजे कलरव-सम सरगम,
गणतंत्र-दिवस के उज्ज्वल
भावों को मधुमय स्वर दो !
.
आँखों में समता झलके,
स्नेह भरा सागर छलके,
गणतंत्र-दिवस की आस्था
कण-कण में मुखरित कर दो !
.
पशुता सारी ढह जाये,
जन-जन में गरिमा आये,
गणतंत्र-दिवस की करुणा —
गंगा में कल्मष हर लो !
.
(121) प्रण
.
मानवी गरिमा सदा रक्षित-प्रतिष्ठित हो
प्रण हमारा !
.
भाग्य-निर्माता स्वयं हों हम,
शक्ति जनता की नहीं हो कम,
व्यक्ति की स्वाधीनता अपहृत न किंचित हो !
प्रण हमारा !
.
एकता के सूत्र में बँध कर,
अग्रसर हों सब प्रगति-पथ पर,
धर्म-भाषा-वर्ण पर कोई न लांछित हो !
प्रण हमारा !

.
दूर  हो अज्ञान-निर्धनता,
वर्ग-अन्तर-मुक्त मानवता,
अर्थ-अर्जित कुछ जनों तक ही न सीमित हो !
प्रण हमारा !
.

(122) चाह
.
जीवन अबाधित बहे,
जय की कहानी कहे !
.
आशीष-तरु-छाँह में
जन-जन सतत सुख लहे !
.
दिन-रात मन-बीन पर
प्रिय गीत गाता रहे !
.
मधु-स्वप्न देखे सदा,
झूमे हँसे गहगहे !
.
मायूस कोई न हो
लगते रहें क़हक़हे !
.
हर व्यक्ति कुन्दन बने
अन्तर-अगन में दहे !
.
अज्ञात  प्रारब्ध का
हर वार हँस कर सहे !
.

(123) शीतार्द्र

.

उतरी धीमे-धीमे
फिर-फिर ओस रात-भर !

.

हिम-शीतल सन्नाटा
छाया सुप्त धरा पर,
फूलों - पत्तों नाची
प्रीति-पुतरिका बनकर,
कारीगर कुहरे ने
किया सृजन कनात-घर !

.

यहाँ-वहाँ जगह-जगह
बिखरे जल-कण हीरे,
घात लगाये फिरते
पवन झकोरे धीरे,
पहरेदार सरीखा
जागा, हर प्रपात, झर !

.

ख़ूब जमी है महफ़िल
अध्यक्ष बनी रजनी,
प्रिय को कस कर बाँधे
जागी-सोयी सजनी,
किसी दिशा में दबका
बैठा, नव प्रभात, डर !

.

(124) नयी ज़िन्दगी

.

कितनी बेबसी के बीच गुज़री जा रही है ज़िन्दगी !

.
हमेशा एक-से दिन, एक-सी रातें,
वही जीवित अभावों की सड़ी बातें,
हृदय पर कर रहीं आघात,
कि कितनी दूर है बरसात ?
प्राणों का अधूरा गीत रह-रह गा रही है ज़िन्दगी !
.
वही सपने पुराने कर रहे हैं छल,
वही कंपन, वही धड़कन, वही हलचल,
हृदय पर कर रही अधिकार,
कि कितनी दूर नव-संसार ?
बारम्बार जीवन के वही क्षण पा रही है ज़िन्दगी !
.
बड़ी सूखी हवाएँ आसमानों पर,
चलीं आवाज़ करतीं आशियानों पर,
हृदय में काँपता विश्वास,
कि कितनी दूर है मधुमास ?
पतझर बीच हलकी साँस ले मुरझा रही है ज़िन्दगी !
.
थकावट के नशे से चूर सारा तन,
बड़ा दुर्बल, बड़ा मजबूर, हारा मन,
हृदय में रह गये अरमान,
कि कितनी दूर है मुसकान ?
छाया हड्डियों की बन अकेली छा रही है ज़िन्दगी !
.
भविष्यत् विश्व का नव-लक्ष्य सुन्दर है,
मगर अभिनव दिशा का पथ न बेहतर है,
बिछे कंटक कठिन, दुर्दम ;
क़दम पर गिर रहे हरदम,

कितनी आफ़तों को चीर हँसती आ रही है ज़िन्दगी !
गहरे इस अँधेरे में किरन बरसा रही है ज़िन्दगी !
.
(125) राग-संवेदन
.
तुम बजाओ साज़ दिल का,
ज़िन्दगी का गीत मैं गाऊँ !
.
उम्र यों ढलती रहे,
उर में धड़कती साँस यह
चलती रहे !
दोनों हृदय में स्नेह की बाती लहर
बलती रहे !
जीवन्त प्राणों में
परस्पर भावना - संवेदना
पलती रहे !
.
तुम सुनाओ
इक कहानी प्यार की मोहक,
सुन जिसे मैं चैन से
कुछ क्षण कि सो जाऊँ !
दर्द सारा भूल कर
मधु-स्वप्न में
बेफ़िक्र खो जाऊँ !
.
तुम बहाओ प्यार-जल की
छलछलाती धार,
चरणों पर तुम्हारे स्वर्ग - वैभव
मैं झुका लाऊँ

.

==========


## कवि : महेंद्रभटनागर

**110 बलवन्तनगर, गाँधी रोड, ग्वालियर  474 002 [म.प्र.]**

**फ़ोन : 0751- 4092908**

**ई-मेल : drmahendra02@gmail.com**

**Website : kavitakosh.org/mbhatnagar.htm**